मेवाड़ के जैन तीर्थ
भाग 2

श्री अद्भुत जी तीर्थ, नागदा (उदयपुर)

।। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री आदिनाथाय: नम: ।।

संकलन, लेखन एवं सम्पादन

मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेतन कॉलोनी, बेदला-बड़गांव लिंक रोड़, उदयपुर-313011 (राजस्थान)

दूरभाष : 0294-2450253, मोबाइल : 94613 84906

प्रकाशक :
श्री अठवालाइन्स जैन संघ तथा
सेठ फूलचंद कल्याणचंद ट्रस्ट,
तपागच्छ संघ, सूरत (गुजरात)

संकलन, लेखन एवं सम्पादन :
श्री मोहनलाल बोल्या
उदयपुर (राज.)

सर्वाधिकार सुरक्षित :
लेखक के अधीन

संस्करण :
सन् 2011

मूल्य :
200/- रूपये

मुद्रक :

कला स्तम्भ
जैन मंदिर चित्तौड़गढ़ किला

समर्पण

सभी आचार्य प्रवर के जीवन को पढ़ा, देखा व सुना
उनकी सौम्य मूर्ति को यह ग्रन्थ समर्पण

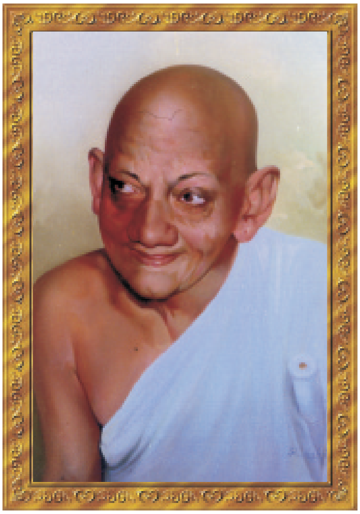

प.पू. सिद्धान्तमहोदधि आचार्यदेव
श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज

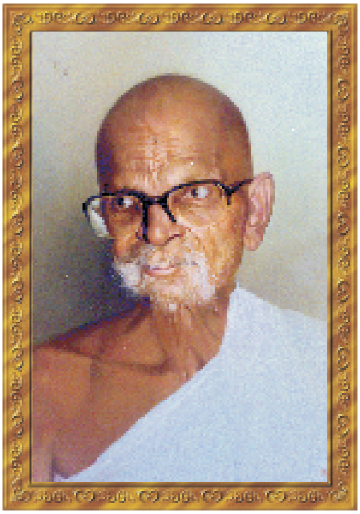

प.पू. मोक्ष मार्ग के सच्चे सारथी आचार्यदेव
श्रीमद् विजयभुवनभानु सूरीश्वरजी महाराज

प.पू. समतासागर पन्यास प्रवर
श्री पद्मविजयजी गणिवर्य

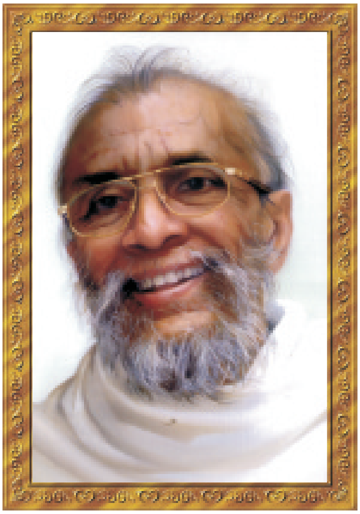

प.पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक आचार्यदेव
श्रीमद् विजय हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज

प्रस्तावना

प्रगटे परम निधान

प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजयकल्याणबोधिसूरीश्वरजी महाराज

छोटा सा पिन्टू, स्कूल से घर आया, सीधा आलमारी के पास गया, अपना गल्ला निकालकर बैठ गया, बड़े आनन्द से रूपये गिनने लगा, ईनाम के, प्रभावना के, भेंट के.... उसके अपने रूपये थे, गिन कर खुश होकर वापस रख दिये।

रात को 9.30 बज गये, अन्तिम ग्राहक ने बिदाई की, दुकानदार कुन्दनमलजी ने शटर गिरा कर सारे दिन का मुनाफा गिन लिया। हँसते मुँह घर की ओर चल दिये।

60 साल के मिश्रीमलजी.....बैंक में लॉकर की चाबी लेकर निकल पड़े। बैंक में जाकर सब पूंजी देख कर फिक्स डिपोजिट, नकद, जेवर, शेयर सब कुछ जी भर के जाँच लिया। प्रसन्नता से वापस लौट आये।

बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक सभी जन अपने वैभव के प्रति अति जागृत होते है। कोई ऐसा नहीं सोचता कि 'ठीक है, जितने पैसे हैं, उतने ही रहने वाले हैं, निरीक्षण से वृद्धि भी नहीं होगी और उपेक्षा से हानि भी नहीं होगी। एक सत्य यह है कि प्रेम पात्र वस्तु का निरीक्षण किये बिना चैन न आता, तो एक सत्य यह भी है कि मूल्यवान वस्तु की उपेक्षा हमें उससे वंचित कर देती है।

ज्ञातव्य है कि भौतिक वस्तु से वंचित रहने में इतना नुकसान नहीं है जितना नुकसान आध्यात्मिक संपति से वंचित रहने में है। हमारी आध्यात्मिक संपति है गुण वैभव एवं गुण वैभव की प्राप्ति हेतु धर्म स्थान।

पैसा, परिवार, घर, दुकान, गाड़ी इन सब पर हमारा ममत्व भाव है, यह सब हमें 'मेरा' लगता है। अत: हम इसका पूरे दिल से देखभाल करते रहते हैं। हम इसे अपना कर्तव्य भी समझते हैं। किन्तु ज्ञानी भगवंत कहते है इस ममत्वभाव से ही तू संसार में भटक रहा है। मोह राजा ने अहंकार एवं ममकार के धागे से ही तुझे कठपुतली बना रखा है।

अहं ममेति मन्त्रोदयं मोहस्य जगदान्ध्यकृत। मोहराज का एक ही मंत्र है - मैं और मेरा इसी मंत्र ने समग्र विश्व को अंध बना दिया है। (ज्ञानसार 4-2)

संसार से मुक्ति पाने का एक ही उपाय है – हम अहं मम से मुक्त हो जाये किन्तु यह कैसे संभव हो सके। इसका भी एक उपाय है कि हम हमारे ममत्वभाव को प्रशस्त क्षेत्र में केन्द्रित कर दे। आज तक हम रटते रहे – घर मेरा, परिवार मेरा, आज से रटण का प्रारंभ करे – मंदिर मेरा, भगवान मेरे......बस, यही रटण हमें शास्वत सुख का स्वामी बना सकता है।

आओ, यह अवसर है हमारी आध्यात्मिक संपति के प्रति जागृत होने का, हमारे पूर्वजों ने सृजन किये हुए अलौकिक वैभव के प्रति उजागर होने का। यदि आप जैन है, सच्चे दिल से जिनशासन के प्रति श्रद्धावान है, आपका अंतर यदि भगवान महावीर का अनुयायी है तो आपको भी इन धर्मस्थानों में आपकी निजी संपति का दर्शन होगा। इस पुस्तक का प्रत्येक पृष्ठ आपको अपूर्व आनंद प्रदान करेगा। आपका हृदय अहोभाव से परिपूर्ण होगा, मन प्रसन्नता से झूम उठेगा।

भौतिक संपति के राग ने मम्मण सेठ को सातवीं नर्क में धकेल दिया और आध्यात्मिक संपति के अनुराग ने शालिभद्र जैसे कई भव्यात्माओं को दिव्य सुख की अनुभूति कराई, कहाँ अनुराग करना चाहिये, यह आप ही तय कर लीजिए।

ध्यान में रहे, वास्तविक अनुराग उसे ही कहते हैं, जहाँ उपेक्षा का नाम भी न हो, जहाँ अनुराग पात्र को देखे बिना एवं उसकी देखभाल किये बिना चैन ना मिले। हमारी इस आध्यात्मिक संपति का अनुराग एवं अनुपालन ही हमारा श्रेष्ठ सौभाग्य है।

शास्त्रकार परमर्षियों ने एक रेड सिग्नल बनाया है – जो अपनी आध्यात्मिक संपति की उपेक्षा करता है, वह अपनी भौतिक संपति भी खो बैठता है। तारक तत्वों की आराधना आबादी की हेतु है तो तारक तत्वों की उपेक्षा बर्बादी का अमोघ कारण है।

उदयपुर के श्रद्धारत्न लेखक श्री मोहनलालजी बोल्या ने गाँव गाँव घूम कर हमारी आध्यात्मिक संपति की सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी एवं छवियों का यह सुंदर संग्रह किया है। आओ, पहले इसका परिचय करें, फिर प्रेम करें, फिर पालन करें.....और इसके द्वारा प्रसन्नता के स्वामी बने....परंपरा से परमपद के आसामी बने।

जिनाज्ञा विरूद्ध लेखन किया हो तो मिच्छामी दुक्कड़म्

आचार्य विजय कल्याणबोधिसूरि.

शुभाशीर्वाद

प.पू. पन्यास प्रवर अपराजितविजय जी महाराज सा. गणिवर्य

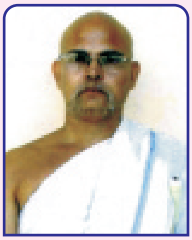

धर्मप्रेमी णमोकार मंत्र के उपासक श्री मोहनलाल जी बोल्या,

धर्म लाभ आशीर्वाद ।

आपने पूर्व में उदयपुर एवं राजसमन्द जिले के इतिहास एवं समस्त मंदिरों के इतिहास की कलात्मक विवेचना प्रदर्शित की । जिसमें आपका पुरूषार्थ ही प्रमुख है । आपके स्वास्थ्य की प्रतिकूलता होते हुए भी आपने पूर्व की पुस्तकों का संकलन व प्रकाशन किया । अब आप मेवाड़ के अछूते क्षेत्र चित्तौड़गढ़ व प्रतापगढ़ जिले के समस्त मंदिरों की विस्तृत जानकारी के साथ मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग-2 का प्रकाशन करने जा रहे हैं, इस हेतु आप साधुवाद के पात्र है आपका यह कार्य अनुमोदनीय है । मेरा विश्वास है कि इस पुस्तक से भी पूर्व की भांति समाज को नई जानकारियां प्राप्त होगी । भविष्य में आपको जैन साहित्यिक इतिहासकार के नाम से पहचाना जाएगा ऐसी मेरी मान्यता है। आपका पुरूषार्थ सार्थक व सफल बने, इसी मंगल कामना के साथ...

मंगल मनीषा

प. पू. श्री निपुणरत्न विजय जी महाराज सा., गणिवर्य

श्री मोहनलाल जी बोल्या,

सादर धर्मलाभ ।

आपने पूर्व में उदयपुर नगर, देलवाड़ा के प्राचीन तीर्थ व मेवाड़ के उदयपुर-राजसमन्द जिले के समस्त मंदिरों के इतिहास, प्रतीमा जी के बारे में विस्तृत जानकारी देकर समाज को वास्तविकता से परिचित करवाया है ।

पुनः अभी आप चित्तौड़गढ़-प्रतापगढ़ जिलों के समस्त मंदिरों व प्रतिमाओं के इतिहास सहित समस्त जानकारी का प्रकाशन करने जा रहे हैं । इससे मेवाड़ के प्राचीनतम तीर्थो की समस्त दुर्लभ जानकारियों का संग्रह हो पाएगा ।

आपका यह कार्य अनुमोदनीय है । आपकी नवीन पुस्तक जन-जन के हाथों में पहुंचे व आपका परिश्रम सफल हो, यही मंगल मनीषा...

शुभ - संदेश

अध्यक्ष - श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर

श्रीमान् मोहनलाल जी सा. बोल्या,

सादर जय जिनेन्द्र ।

आपने इस नवीन पुस्तक के माध्यम से लेखन व प्रकाशन की ओर एक और कदम बढ़ाया है। पूर्व लेखन की भांति इस पुस्तक में भी आपने जैन साहित्य का शोध कर इतिहास को ध्यान में रखकर जैन समाज को सत्य का ज्ञान कराया है। पूर्व में भी आपने कई पुस्तकों के माध्यम से जैन साहित्य के सम्बन्ध में लेखन प्रकाशित किये हैं। आपकी पुस्तकों को पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ इससे मुझे काफी जानकारी प्राप्त हुई। इसी के आधार पर मैं पुराने दस्तावेजों की खोज कर रहा हूँ । आपका स्वास्थ्य अनुकुल नहीं रहने पर भी इतना कार्य कर रहे हैं, इसकी अनुमोदना करते हुए आप आत्म कल्याण में आगे बढ़े इसी शुभकामनाओं के साथ...

तेजसिंह बोल्या

ग्रंथ के द्रव्य सहायक

प. पू. प्राचीन आगम शास्त्रोद्धारक
वैराग्य देशना दक्ष आचार्य देव श्रीमद् विजय
हेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज

एवं आचार्यदेव श्रीमद् विजय
कल्याणबोधि सूरीश्वरजी महाराज
की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से

श्री अठवालाईन्स जैन श्वेताम्बर मू. तपा. संघ
तथा
सेठ फूलचंद कल्याणचंद ट्रस्ट ने

ज्ञाननिधि से इस ग्रंथ के लिए
महत्वपूर्ण लाभ लिया है....

खूब खूब अनुमोदना

संपादकीय

नगराणां भूषणार्थ देवानां निलयाय च ।
लोकानां धर्म हेत्व क्रीडार्थ सुरयोषितम् ।।

देव मंदिर के प्रसादों की रचना नगर की शोभा, देवों का निवास, लोगों की धर्म वृद्धि और देवांगनाओं की क्रीड़ा के लिए होती है ।

प्रसाद प्राणी मात्र का आश्रय स्थान, वीर पुरूषों की कीर्ति तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति में कारण भूत तथा सर्व इच्छाओं को देने वाला होता है।

गीत नृत्य और वाद्यों से सदैव ही गुंजायमान, दर्शनीय और मनोहर, नाना प्रकार की ध्वजाओं-पतकाओं तथा तोरणों से अलंकृत प्रासादों (मन्दिर) नगर, राजा तथा प्रजा आदि के सर्वकाल सुख शान्ति देने वाले, सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति करने वाले तथा नित्य कल्याण करने वाले होते हैं।

सुन्दर देवालय, किसी भी देश के गौरव व शोभा को बढ़ाने वाले होते हैं, ये नगर के अलंकार है । इन सुंदर देवालयों की प्राचीनता अक्षुण रूप से बनाए रखना आवश्यक है । इन्हीं प्राचीनता के आधार पर जैन धर्म का अस्तित्व है, आज हमारे तीर्थकरों को संदेहात्मक कहा जाता है इसलिए भी आवश्यक है कि प्राचीन मंदिरों को, शिलालेखों को सुरक्षित रखा जावे । जिनालय स्वच्छ, अनन्त, अखाण्ड है अत: यही

मेरी अभिलाषा

है......देवाधिदेव.............अरिहन्त देव आप तो चिंतामणी तुल्य है,
चिन्त्य एवं अचिन्त्य सर्व पदार्थो को प्रदान करने के लिए आप समर्थ है....
है..प्रभु...मुझ पर अनुग्रह करें...
आपकी वंदना से सुविशुद्ध, सम्यग्बोधि जीवन तथा मृत्यु में
समाधिशुद्ध परिणित की आत्मानुभुति तथा परम पद मुझे प्राप्त हो ।
यही मेरी अभिलाषा...

(मोहनलाल बोल्या)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	संदेश	I-VI
2.	संपादकीय	VIII
3.	लेखक की कलम से	XIII-XIV
4.	चित्तौड़गढ़ नक्शा	XV
5.	मेवाड़–चित्तौड़–जैन धर्म	1–10
	तहसील–चित्तौड़गढ़	
6.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर (सातबीस मंदिर), चितौड़गढ़ किला	11–17
7.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, (सातबीस मंदिर परिसर)	18–19
8.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (सातबीस मंदिर परिसर)	20–21
9.	श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, चितौड़ किला	22–23
10.	श्री शांतिनाथ भगवान का (चौमुखा जी) मंदिर, चित्तौड़ किला	24
11.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, चित्तौड़ किला	25–26
12.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, चितौड़ किला	27–28
13.	सातबीस मंदिर व अन्य मंदिर से सम्बन्ध में उपलब्ध लेख	29–32
14.	श्री हरिभद्र सूरि स्मृति मंदिर, चित्तौड़गढ़	33–39
15	श्री महावीर भगवान का मंदिर, चित्तौड़गढ़ शहर	40–41
16.	श्री चितांमणि पार्श्वनाथ का मंदिर	42
17.	श्री आदिनाथ भगवान का (यति जी) मंदिर	42
18.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, गिलुण्ड	43–44
19.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, घटियावली	45–46
20.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर सेंती, चित्तौड़गढ़	47–48
21.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, चित्तौड़गढ़ (रेल्वे स्टेशन)	49–50
22.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, घोसुण्डा	51–52
23.	श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर, सावा	53–54
	तहसील–गंगरार	
24.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, गंगरार	55–56
	तहसील–बेंगू	
25.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, बेगू (शहर)	57–58
26.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, बेंगू (किला)	59–60
27.	श्री रत्नप्रभसूरि मंदिर	60
28.	श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, बस्सी	61–62
29.	श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, पारसोली	63–64
30.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, बिछोर (भिचोर)	65–66
31.	श्री अरनाथ भगवान का मंदिर, नंदवई	67–68
	तहसील–भैंसरोड़गढ़	
32.	श्री सुविधिनाथ भगवान का मंदिर, अणुनगरी रावतभाटा	69–70
33.	श्री केसरियानाथ भगवान का मंदिर, भैसरोड़गढ़	71–72
34.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बस्सी (आम्बा)	73–74

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
	तहसील–भदेसर	
35.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, भदेसर	75–76
36.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, भादसोड़ा	77–78
37.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, बानसेन	79–80
38.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मण्डफिया (सांवलियाँ)	81–83
39.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, आसावरा	84–85
	तहसील–राशमी	
40.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, राशमी	86–88
41.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, जाश्मा	89
42.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, पहुँना	90–92
43.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, आरणी	93–94
44.	श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर, डिण्डोली	95–96
45.	श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भीमगढ़	97–98
46.	श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, बारू	99–100
47.	श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, रूद	100
	तहसील–बड़ीसादड़ी	
48.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, बड़ीसादड़ी	101–104
49.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, निकुम्भ	105–106
	तहसील–डूँगला	
50.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, डूँगला	107–108
51.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, अरनेड़	109–110
52.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, मंगलवाड़	111
53.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, चिकारड़ा	112
54.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, मोरवन	113–114
55.	श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, संगेसरा	115–116
	तहसील–कपासन	
56.	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, कपासन	117–118
57.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, कपासन	119–120
58.	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, हथियाणा	121–124
59.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, उमण्ड	125–126
60.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, दांता (नानेश नगर)	127
61.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, गौराजी का निम्बाहेड़ा	128–129
62.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, लांगच	130
63.	श्री आदिश्वर भगवान का मंदिर, आकोला	131–132
64.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, आकोला (तांणा)	133–134
65.	श्री करेड़ा (करहेडक) पार्श्वनाथ भगवान, भूपालसागर (चित्तौड़गढ़)	133–154
66.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सिंहपुर	155–156

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
	तहसील–निम्बाहेड़ा	
67.	श्री आदिनाथ (ऋषभदेव) भगवान का मंदिर, निम्बाहेड़ा	157–159
68.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, पीपली चौक, निम्बाहेड़ा	160–161
69.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, पीपली चौक, निम्बाहेड़ा	162–163
70.	श्री पादुका मंदिर पीपली चौक, निम्बाहेड़ा	164
71.	श्री जिनकुशलसुरि दादावाड़ी मंदिर, निम्बाहेड़ा	164
72.	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, निम्बाहेड़ा	165–166
73.	श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मंदिर, निम्बाहेड़ा	166
74.	श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, कचरिया खेड़ी	167–168
75.	श्री सुपार्श्वनाथ का मंदिर, रेल्वे फाटक के पास, निम्बाहेड़ा	168
76.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, कानेरा (घाटा)	169–170
77.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, मेलाना	171
78.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, केली (निम्बाहेड़ा)	172–173
79.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, बांगराड़ा (मामादेव)	174
80.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, रानीखेड़ा (निम्बाहेड़ा)	175–176
81.	श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर, विनोता (निम्बाहेड़ा)	177–178
82.	श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, सतखण्डा	179–180
83.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, सतखण्डा	181
84.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, मेवासा	182
85.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मांगरोल	183–184
86.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, अरनोदा	185–186
87.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, लसड़ावन	187–188
88.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, बाड़ी (निम्बाहेड़ा)	189
89.	पूर्व में प्रकाशित ''मेवाड़ के जैन तीर्थ'' भाग–1 पुस्तक के संशोधन	190
90.	उदयपुर नगर एवं उदयपुर जिले में निर्मित नूतन जैन श्वेताम्बर मंदिर	191
91.	शास्त्रोक्त जैन प्रतीक चिन्ह	192
	प्रतापगढ़ जिला	
92.	प्रतापगढ़ का इतिहास	193
93.	प्रतापगढ़ मानचित्र	194
	तहसील–प्रतापगढ़	
94.	श्री महावीर भगवान का मंदिर (दादावाड़ी), प्रतापगढ़	195–197
95.	श्री सुमतिनाथ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	198–200
96.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	201–203
97.	श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	204–207
98.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	208
99.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर (गुमान जी का मंदिर), प्रतापगढ़	209–215
100.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	216–217

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
101.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	218–219
102.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	220–221
103.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	222–224
104.	श्री चन्द्रप्रभ भगवान का मंदिर, प्रतापगढ़	225–226
105.	श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, देवगढ़	227–230
106.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, अमलावद	231–233
107.	श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, खेरोट	233
108.	श्री ऋषभदेव (आदिनाथ) भगवान का मंदिर, बरड़िया	234–235
108	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कनोरा	236–237
109.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, पीलू	238–239
110.	श्री श्रेयांसनाथ भगवान का मंदिर, रठांजना	240–241
111.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, बोरी	242–244
112.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, धमोतर	245–247
113.	श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, बारावरदा	248–249
	तहसील–अरनोद	
114.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, अरनोद	250–251
115.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, अरनोद	252
116.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, रायपुर (अरनोद)	253–254
117.	श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, सांखथली थाना	255–256
118.	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, दलोट	257–258
119.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सालमगढ़	259–261
120.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, निनोर	262–263
121.	श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, निनोर	264–265
122.	श्री पद्मावती देवी का मंदिर, निनोर	265
123.	श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, बड़ी सांखली	266–267
124.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, मोहड़ा	268–269
	तहसील–छोटीसादड़ी	
125.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, रमावली	270–272
126.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, छोटीसादड़ी	273–274
127.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, छोटीसादड़ी	275–277
128.	श्री आदिनाथ भगवान का (घर देरासर) का मंदिर, छोटीसादड़ी	277
129.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, कारूण्डा	278
130.	श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर, जालोदा जागीर	279–280
131.	श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, चान्दोली	280
132.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, केसुन्दा	281–282
133.	भावी चौबीसी व वर्तमान चौबीसी के तीर्थंकर चिन्ह	283
134.	संदर्भित पुस्तकों की सूची	284

लेखक की कलम से

भारत की संस्कृति विश्वविख्यात है, भारत में जैन संस्कृति भी बहुत प्राचीन है, संस्कृति के साथ जैन धर्म आदिकालीन है। जहाँ लोग श्रद्धा से ओत-प्रोत हैं, श्रद्धा भारत की आत्मा है। इसी कारण भारत में स्थान-स्थान पर मंदिरों का निर्माण हुआ है।

अनेक ऐसे मंदिर हैं जो भूमिगत या खण्डहर हो गये हैं लेकिन उस पर अंकित शिल्प व शिलालेख आज भी अतीत की गाथा बतलाते हैं।

भगवान श्री आदिनाथ ने समाजीकरण, भगवान महावीर की अंहिसा, राम की मर्यादा, बुद्ध का मध्यम मार्ग व कृष्ण का कर्मयोग राष्ट्र की आधार शिला के रूप में समाहित की।

जैन धर्म का मुख्य प्रभाव स्थल भारत ही है इसी कारण भारत पवित्रतम्य भूमि कहलाई है। इसी भूमि पर सभी तीर्थंकर, चक्रवती, बलदेव, वासुदेव व प्रतिवासुदेव उत्पन्न हुए, जिनके प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए तीर्थ, मंदिर व शास्त्रों के निर्माण हुए।

मेवाड़ की यह भूमि पूजनीय व पावन है, जहाँ पर जैन धर्म के अतिरिक्त भी मीरा का ध्यान, महाराणा प्रताप की शौर्यता, पद्मनि का जौहर, श्री हरिभद्रसूरि जी के शास्त्र व टीकाएं कर्माशाह दोशी की कर्तव्य परायणता देखने को मिलती है।

मेवाड़ के मंदिरों की वास्तुकला जो दिखाई देती है उससे उसकी प्राचीनता की पहचान होती है। जिससे प्राचीनता को सुरक्षित रख सकें।

पूर्व में प्रकाशित पुस्तकें उदयपुर के जैन श्वेताम्बर मंदिर, मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ देलवाड़ा जैन मंदिर, मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग-1 में उदयपुर, राजसमन्द जिले के सभी मंदिरों को इतिहास के पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है, तथा इन प्रकाशित पुस्तकों में अपने विचार व्यक्त किये हैं उनको स्थाई रखते हुए अब इन विचारों को भी समावेश करता हूँ। परमात्मा का नाम, परमात्मा की मूर्ति व परमात्मा के मंदिर ये सब परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करने के माध्यम हैं। यह सम्बन्ध अन्तर प्रीति से होता है। यदि यह सम्बन्ध हो जाता है तो दुनिया के सारे सम्बन्ध नीरस हो जाते हैं और समग्र जीव-सृष्टि से मैत्री भाव का सम्बन्ध स्थापित होगा। सभी चिन्ताएं समाप्त होगी, सारे भय मिट जाएंगे, मन प्रफुल्लित होगा, प्रसन्नता कभी नष्ट नहीं होगी।

लेकिन कभी - कभी मुनष्य यह सोचता है कि वह प्रतिदिन मंदिर जाता है इसलिए ईश्वर से परिचित हो गया हैं मंदिर तो केवल परमात्मा की दृष्टि में प्रवेश करने का मात्र द्वार है इसलिए वहाँ भक्ति में लीन होना ही परमात्मा की दृष्टि में प्रवेश हो सकते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक मेवाड़ के जैन तीर्थ (चित्तौड़ , प्रतापगढ़ जिलों) के सभी मंदिरों का इतिहास, प्रतिमा का आकार - प्रकार व लेखों का संकलन कर प्रस्तुत किया जा रहा है। मेरी यह भावना है कि मेवाड़ के जैन धर्म की प्राचीनता जन-जन तक पहुँचे व शौधकर्ता इस कार्य को आगे बढ़ाए। अब मेवाड़ के जिला भीलवाड़ा के मंदिर का

इतिहास संकलन करना शेष रहता है, यदि सभी का सहयोग रहेगा तो इस कमी को पूरी कर मेवाड़ के सभी जैन मंदिरों का इतिहास सुरक्षित रह सकेगा।

प्रस्तुत पुस्तक में उल्लेखित तीर्थो का सर्वेक्षण संकलन कार्य निम्न संस्थाओं, व्यक्तियों से सहयोग प्राप्त हुआ, उनका आभार।

1. श्रीमती सुशीला बोल्या
2. श्रीमती (डॉ.) विमला जी दोशी
3. श्री दिलीप जी चौरड़िया
4. श्री श्रीमाल सेठ अचलगच्छीय मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर
5. श्री विरेन्द्रकुमार जी सिरोहिया
6. श्री दयालसिंह जी नाहर
7. श्री राजेन्द्र जी दलपतसिंह जी दुग्गड़
8. श्री भोजराज जी लोढ़ा
9. श्रीमती निशी खमेसरा (मुम्बई)
10. श्रीमती नीरू लोढ़ा
11. श्री हीरालाल जी दोशी, सरंक्षक–श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री संघ, चित्तौड़गढ़
12. श्री कन्हैयालालजी महात्मा–श्री सातबीस देवरी जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट, चित्तौड़गढ़
13. श्री राजेन्द्र जी कछाला, चित्तौड़गढ़
14. प. पू. मणिप्रभ विजय जी म. सा. की प्रेरणा से संघवी श्री चम्पालालजी जीवराजजी, नि. गोदन हाल करसापुर (आंध्रप्रदेश)
15. श्री तेजसिंह बोल्या, अध्यक्ष–श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर
16. श्री महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति, अम्बामाता, उदयपुर
17. सर्वेक्षण कार्य में श्री हरकलाल जी पामेचा नि. देलवाड़ा का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, उनका आभार

जिन आज्ञा से विपरित प्रतीत हो तो मिच्छामी दुक्कड़म्

(मोहनलाल बोल्या)

चित्तौड़गढ़ जिले के जैन मंदिरों का मानचित्र

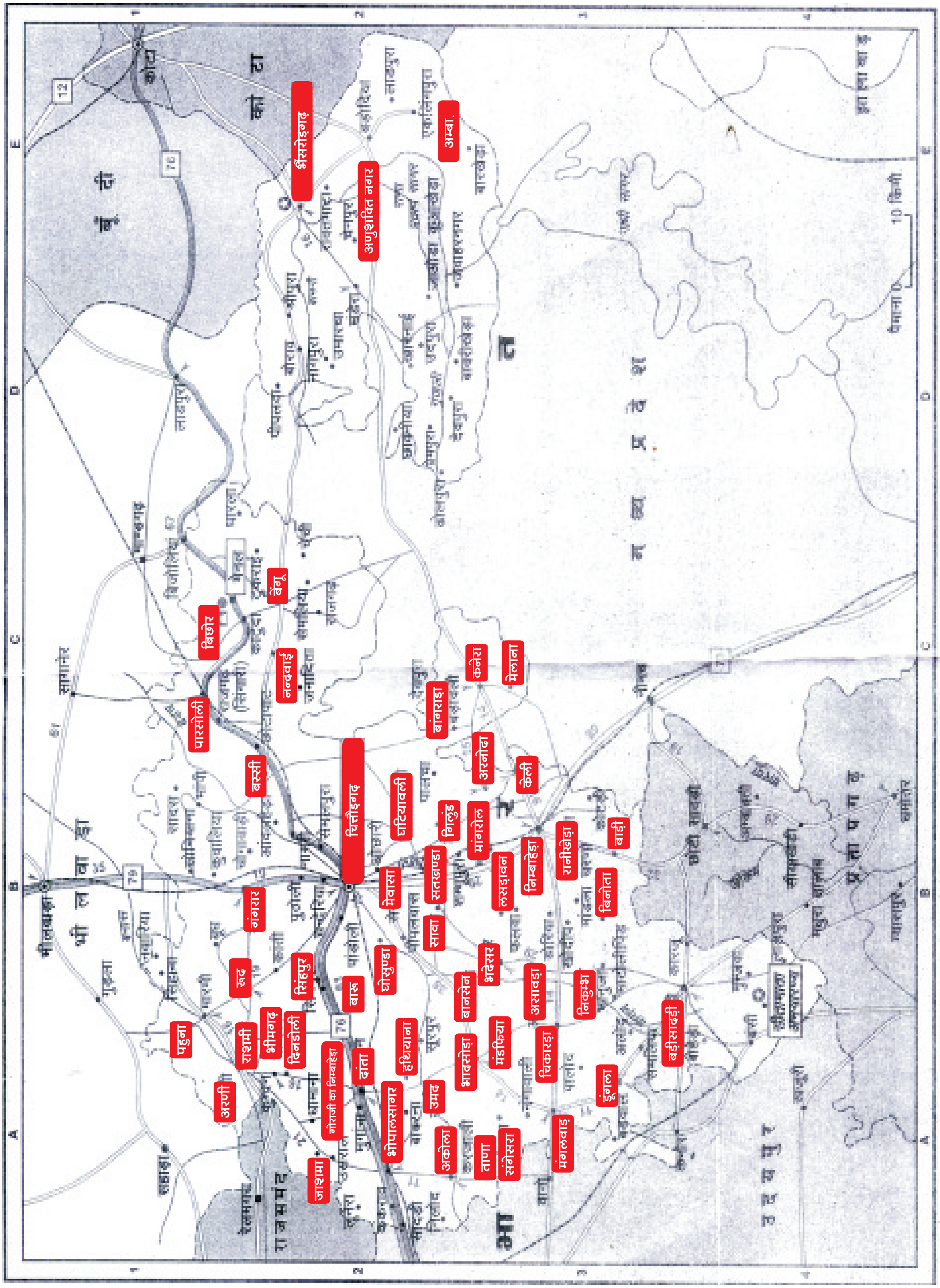

श्री पद्मावती माता

सौजन्य : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर

मेवाड़ – चित्तौड़ – जैन धर्म

मेवाड़ राज्य वर्तमान में राजस्थान के दक्षिण में 23.49 डिग्री से 25.28 डिग्री उत्तरी अक्षांश व 73.01 डिग्री से 75.49 डिग्री तक देशांतर के बीच स्थित है।

मेवाड़ राज्य का पृथक से एक इतिहास रहा है। मेवाड़ की धरा प्राचीन धरोहर से ओतप्रोत रही है जो आज भी शिलालेख, पट्टे (ताम्रपत्र) व अभिलेखों से प्रमाणित है।

मेवाड़ की सीमा विशाल क्षेत्र में स्थित है जिसके लिए मेवाड़ के जैन तीर्थो को पृथक-पृथक भागों में विभाजित किया है जो निम्न पुस्तकों में किया है –

1. उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ।
2. मेवाड़ का प्राचीन तीर्थ देलवाड़ा जैन मंदिर
3. मेवाड़ के जैन तीर्थ (उदयपुर एवं राजसमन्द जिलों के जैन श्वेताम्बर मंदिर का इतिहास)
4. अब आपके हाथों में मेवाड़ के जैन तीर्थ (भाग-2) जिसमें चित्तौड़गढ़ व प्रतापगढ़ जिले के सम्पूर्ण जैन श्वेताम्बर मंदिरो का इतिहास लेखो में संकलन कर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है।

चित्तौड़गढ़ मेवाड़ का प्रमुख क्षेत्र एवं राजधानी रहा है। चित्तौड़गढ़ का वर्णन करने से पूर्व मेवाड़ को विस्तृत रूप से देखना होगा।

प्राचीनकाल में मेवाड़ की राजधानी मझमिका नगरी रही है जो चित्तौड़ नगर से 10 किलोमीटर दूरी पर स्थित है जो आज भी नगरी के नाम से विख्यात है जिसे आज प्राचीन खण्डहरों में देखे जा सकते हैं। मेवाड़ राज्य में मेर-मेद नामक जाति रहती थी और इसी आधार पर इसको मेदपाट कहा गया है। मेदपाट संस्कृत का शब्द है, इसके बारे में यह भी उल्लेख है मेद जाति के लोग शाकद्विपीय ब्राह्मण के नाई थे जो ईरान की तरफ (शकस्तान) से आना बतलाते हैं। मेवाड़ की प्राचीनता के बारे में कई सर्वेक्षण किये गये हैं।

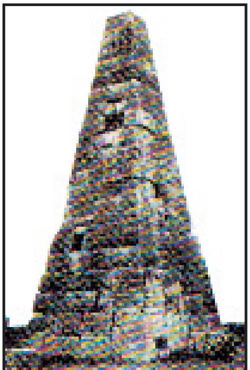
ऊब दीवल का जाबा (प्रकाश स्तम्भ) नगरी

इसी नगरी के स्थल पर अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण करते हुए अपना डेरा डाला था। चित्तौड़ किले की रात्रिकालीन गतिविधी जानने के लिए ''ऊब दीवल का जाबा

(प्रकाश स्तम्भ)'' का निर्माण करवाया जिसके प्रकाश के माध्यम से गोली-बारूद का प्रयोग करते थे। इस प्रकाश बिन्दू को नष्ट करने के लिए चित्तौड़ शासक द्वारा इसे तोप से उड़ा दिया। दीपक तो नष्ट हो गया पर वह स्तम्भ आज भी खण्डहर के रूप में विद्यमान है।

भारतीय इतिहास में यह स्थल महत्वपूर्ण है। सर ए.सी.एल. कार्लाईल ने सन् 1887 में नगरी (मझमिका) का एक सर्वेक्षण कर यह बताया कि यह नगरी भागवत धर्म से भी प्राचीन है तथा खनन से प्राप्त सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि से वि. संवत् तीसरी शताब्दी पूर्व के लेख उत्कीर्ण हैं इस पर मलि सिकाय शिविपदस् (शिविदस) अंकित है, जो मझमिका का सिक्का था इसके अतिरिक्त भी कार्लाईल ने यहाँ के शवघरों से प्राप्त राख, अस्थियाँ, घड़े तथा अन्य सामग्री का अध्ययन किया जिसका वर्णन हिस्ट्री आफ इण्डियन आर्कियोलोजी द्वारा चक्रवती दिलीप में है। इससे यह स्पष्ट है कि चित्तौड़ महाकाव्य के समय का था। नगरी में रहने वाले मूलत: पंजाब के रहने वाले थे, जो बाद में राजस्थान (मेवाड़) में रहने लगे। इसको पुरातत्व विभाग ने स्पष्ट किया है। इसके अतिरिक्त पंतजलि के महाभाष्य में मध्यमिका इण्डो यूनानी आक्रमण का वर्णन है।

चित्तौड़ (मेवाड़) के संबंध में 22 फरवरी 1902 को जोन मार्शल (भारतीय पुरातत्व के निदेशक) ने डॉ. डी.आर. भण्डारकर को सर्वेक्षण कार्य सुपुर्द किया। सन् 1915-16 में मध्यमिका नगरी उत्खनन कर इसके प्राक् व आद्य (प्रारम्भिक व उत्तर इतिहास) का वर्णन किया है।

डॉ. वी.एन. मिश्र ने गम्भीरी नदी के पेटे से 242 पाषाण उपकरणों (हस्त कुल्हाड़ी, छिलनी, फलक) के नमूने एकत्रित किये इसके आधार पर पुरातत्व विभाग ने सिद्ध किया कि पंजाब की हड़प्पा व मोहनजोदड़ो तथा मद्रास (चैन्नई) की हस्त कुल्हाड़ी संस्कृति के मध्य स्थापित की है। (प्री.एण्ड प्रोटो हिस्ट्री ऑफ बेड़च वेली पृष्ठ 35-36) व (इण्डियन आर्कोयोलोजिकल रिव्यू 1963-64 पृष्ठ 36) इससे यह पुष्टि होती है कि उस समय पाषाण की संस्कृति विद्यमान थी तथा पाषाण के परिवर्तन से पुरा, मध्य व उत्तरा पाषाण को देखा गया जो कालीबंगा, हड़प्पा संस्कृति के साथ की स्थापित होती है। इस संस्कृति को गणेश्वर व आहाड़ संस्कृति जो स्वतंत्र संस्कृति रही है, जो हड़प्पा संस्कृति के पूर्व की थी।

आहाड़ संस्कृति के 106 स्थानों से जिसमें से 38 स्थान चित्तौड़ क्षेत्र के पाषाण लिए उसका अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हुआ कि यह संस्कृति 4000 वर्ष से अधिक प्राचीन है। आहाड़ संस्कृति को 4000 वर्ष प्राचीन होने का प्रमाण हेतु सर्वेक्षण ऐतिहासिक विभाग के डॉ. रतनचन्द अग्रवाल ने आहाड़ क्षेत्र का उत्खनन कर सिद्ध किया। इस संबंध में पाषाण, ताम्र धातु के उपकरण, कृषि उपयुक्त उपकरण तैयार करते थे एवं कृषि करने की कला, चित्रकला वास्तुकला में भी प्रवीण थे, अत: मेवाड की संस्कृति प्राचीन एवं विकसित थी इसी प्रकार बड़ली के सर्वेक्षण में प्राप्त 166 सिक्के भी जनपदीय थे तथा बड़ली ग्राम (अजमेर के पास) से प्राप्त शिलालेख भगवान महावीर के निर्वाण के 84 वर्ष बाद का है। दोनों प्रदेश के मध्य होने के कारण इस प्रदेश को मध्यबाड कहा जाता था जो बाद में मेवाड़ कहा जाने लगा। इससे यह स्पष्ट है कि नगरी ई. पू. से चौथी शताब्दी के पूर्व में विद्यमान थी।

पुष्यमित्र व वसुमित्र शुभ ने कालीसिंध के तट पर यूनानियों पर आक्रमण कर पराजित कर एक महायज्ञ का आयोजन किया, जिसको अश्वमेघ यज्ञ कहा गया है। पंतजलि के अनुसार इसका सम्बन्ध यूनान से बतलाया है। इसी प्रकार नगरी से प्राप्त शिलालेख जो 150-200 ई. पूर्व का है व कई भागों में खण्डित है तथा घोसुण्डी लिपि का है। इस पर संस्कृत, मेवाड़ी ब्राह्मीलिपि अंकित हैं तथा अश्वमेघ का भी वर्णन है। (उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है)

वि.सं. 282 का नांदशा ग्राम से प्राप्त शिलालेख में भी षष्टिरात्र महायज्ञ करने का उल्लेख है व घोसुण्डी ग्राम से प्राप्त शिलालेख में भी सर्वनाम राजा के द्वारा अश्वमेघ यज्ञ कराने का उल्लेख है। अन्त में समुद्रगुप्त राजा रहे जिन्हें पराजित कर अपना राज्य बना लिया फिर भी मझमिका का छठीं शताब्दी तक अस्तित्व बना रहा।

चित्तौड़ के पास भगवानपुरा ग्राम से राख के रंग की तस्तरी प्राप्त हुई जो हस्तिनापुर के द्वितीय काल में भी प्राप्त हुई, जिसको छठीं शताब्दी ई.पू. से तीसरी शताब्दी ई.पू. की मानी गई है। (आर्कियोलोजिकल रिव्यू 1957-58 के पृष्ठ 43-46) मध्यमिका (मझमिका) का उल्लेख महाभारत में सभापर्व में नकुल की दिग्विजय यात्रा के प्रसंग में आया है इसके अतिरिक्त श्री रामवल्लभ सोमाणी ने बनास के तट पर (मेवाड क्षेत्र में) श्रुतायुध नामक राजा द्वारा राज्य करते थे। ऐसा मध्यमिका में प्रसंग आया है। विक्रमादित्य के पूर्व 6-7वीं शताब्दी में रचित पाणिनीकृत अष्टाध्यायी (व्याकरण) में भी इसका उल्लेख आया है।

महाभारत काल से गुप्तकाल पर्यन्त मध्यमिका के नाम से प्रसिद्ध रही है। प्राकृत भाषा में इसको मझमिका कहा गया है इस अवधि में नगरी में सभी जातियां जैसे जैन, बौद्ध, ब्राह्मण आदि रहती थी और सभी की संस्कृति पल्लवित थी।

मेवाड़ का नाम स्कन्द पुराण में भी उल्लेख है। युग पुराण में मेवाड़ की सभ्यता की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। जिसका उल्लेख गम्भीरी नदी व आहाड़ के पास से प्राप्त पाषाण से, इसवाल क्षेत्र को लोहा उत्पादन केन्द्र माना है।

चित्तौड़ मेवाड़ का प्रमुख क्षेत्र रहा है। चित्तौड़ के निर्माण काल अनुश्रुति के अनुसार भीम (पाण्डव) कुकड़ेश्वर ने कराया है।

जैन धर्म के अनुसार महाराजा सम्प्रति द्वारा हुआ है। सिद्धसेन दिवाकर की दीक्षा नगरी के बाहर एक विशाल मंदिर में हुई। इसकी शिला ई. पू. के दूसरी शताब्दी की है जो ब्राहमी लिपि में है (शिलालेख उदयपुर के संग्रहालय में देखा जा सकता है) और इसी शिला पर बैठकर श्री सूरिजी ने अध्ययन किया तथा वर्तमान में इस स्थान को नारायण-वाटिका कहा गया है। बौद्ध के वैसंतर जातक में मध्यमिका के शिवि राजा संजय के द्वारा अपने दानपत्र वैसंतर के मंत्रियों व प्रजा को एक पहाड़ पर रहने का उल्लेख आया है। इस पहाड़ी को बाद में बीका की पहाड़ी कहा जाता रहा है। वैदिक धर्म के अनुसार इसे महाभारत कालीन बताया है।

यह संस्कृति ईसा पूर्व 200 वर्ष तक जीवित थी, बाद में शनै: शनै: इसका ह्रास हुआ। मझमिका ध्वस्त होने से पूर्व ही चित्तौड़ दुर्ग की स्थापना हो चुकी थी। चित्तौड़ दुर्ग का निर्माण चित्रागंन मौर्य द्वारा चौथी शताब्दी में कराया जाने का उल्लेख है।

उक्त प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि यह दुर्ग चौथी शताब्दी में निर्मित है। जैन धर्म के आधार पर भी प्रमाणिकता निम्न प्रकार है।

जैन कीर्ति स्तम्भ का निर्माण करवाने के बारे में विभिन्न विद्वानों के मतभेद रहे हैं। भारतीय पुरातत्व के जनरल मे. ए.कर्निंघम ने लिखा है कि यह जैन स्तम्भ जिसका आकार 75.6’ ऊँचा व 30 फीट घेरा व 15’ जमीन से ऊपर है, तथा इसके पास एक खण्डहर शिलालेख प्राप्त हुआ जिस पर लेख था - ’’संवत् 952 वैशाख 30 गुरूवार इसके आधार पर 10वी. शताब्दी का है, इसके आगे यह भी लिखा संभवतया से 1100 का अनुमान है। कई अभिलेखों के आधार पर स्तम्भ का निर्माण बघेरवाल महाजन जीजा या जीजक द्वारा कराया जाने का उल्लेख है। यहाँ तक कि एक अभिलेख में राजा

कुमारपाल के बनवाने का उल्लेख है। भारतीय पुरातत्व के महान् विद्वान् जेम्स फर्ग्यूसन ने अपने ग्रन्थ में लिखा है - श्री अल्लट के स्तम्भ के नाम से प्रसिद्ध कीर्ति स्तम्भ अपनी शैली का अद्वितीय उदाहरण है, एक अन्य उल्लेख के अनुसार इसका निर्माण महाराणा अल्लट के समय में चित्तौड़ की सभा में राजगच्छ के आचार्य प्रद्युम्मनसूरि ने दिगम्बर आचार्य को हरा शिष्य बनाया, इसकी स्मृति में यह जैन-स्तम्भ बनाया, जिसका जिर्णोद्धार कुमारपाल ने कराया।

श्री ई.पी. हावेल ने भी अपने ग्रन्थ में इस स्तम्भ को 14वी. शताब्दी का माना है। इसी प्रकार श्री पारसी ब्राउन ने अपने ग्रन्थ में इस स्तम्भ को 14वीं शताब्दी माना है तथा श्री आनंद के कुमार स्वामी व उदयपुर के इतिहासकार श्री गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने चौदहवीं शताब्दी माना है। इस प्रकार श्री वासुदेव अग्रवाल, श्री ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद जी, माधुरी देसाई, डॉ. उमाकान्त प्रेमचंद शाह, भारत सरकार के टूरिज्म विभाग, श्री सत्यप्रकाश (पुरातत्व विभाग) श्री विजयशंकर श्री वास्तव, श्री जी.एस. आचार्य ने 'राजस्थान परिचय' में श्री कैलाशचन्द्र जैन, श्री अगरचंद नाहटा, मुनि श्री कांतिसागर जी म. आदि की मान्यतानुसार इसका निर्माण काल 12वी. शताब्दी से 15 वी. शताब्दी बताया है तथा बाबू कान्ता प्रसाद जी के अनुसार कीर्तिस्तम्भ को सन् 952 में बघेरवाल जाति द्वारा बनवाया था जिसका लेख कर्नल टॉड को मिला था।

इसी प्रकार मुनि ज्ञान विजय जी ने राजा अल्लट द्वारा संवत् 895 में कराया। किसी भी वस्तु का निर्माण काल की प्रमाणिकता का आधार शिलालेख व अभिलेख पर आधारित होता है, इसी आधार पर इसका निर्माण काल 9वीं शताब्दी माना गया है।

इसी सन्दर्भ में जैनाचार्य का वर्णन करे तो श्री देवगुप्त सूरि जी विहार करते हुए इस क्षेत्र में संवत् 79 में आये थे तथा संवत् 215 में यज्ञदेव सूरि आये थे।

1. **श्री हरिभद्र सूरि -** इनका जन्म चित्तौड़ में ही राजपुरोहित परिवार के ब्राह्मण कुल में हुआ। ये प्रखण्ड विद्वान् थे। ये जैन धर्म के विरूद्ध थे लेकिन जैन धर्म का प्रभाव ऐसा पड़ा कि वे जैन धर्म में दीक्षित हुए और जैन साहित्य की सेवा की। इनके दीक्षित गुरू श्री जिनभद्र सूरि रहे। इनका कार्यकाल 6ठीं शताब्दी माना जाता है। ये प्रमाण शास्त्र के ज्ञाता थे। इन्होनें अपने शिष्य हंस व परमहंस को प्रमाण शास्त्र में प्रशिक्षित किया। वे आगम क्षेत्र में प्रमुख टीकाकार थे। इन्होनें

अलग-अलग सूत्रों में आवश्यक (22000 श्लोक) दशवैकालिक, जीवामिगम, प्रज्ञापना नंदी (2336 श्लोक) और अनुयोग द्वार (84000 श्लोक) में संस्कृत टीकाओं की रचना की। इन्होंने जैन शास्त्र की नहीं वरन् बौद्ध दर्शन पर भी टीकाएँ लिखी। इनकी प्रमुख रचना शास्त्रवार्ता समुच्चय, योगदृष्टि समुच्चय, विंशतिविंशका, दंसण सुद्धि (दर्शन शुद्धि), सावंग धम्म प्रकरण (श्रावक धर्म), सावंग धम्म समास (श्रावक धर्म समास) अनेकान्त जय पताका की रचना की। इसके अतिरिक्त समराइच्चकहा प्राकृत रचना है। इन्होंने 1444 ग्रन्थों की रचना की।

2. **श्री सिद्धसेनसूरि** - पाँचवी शताब्दी के महान साहित्यकार, प्रवचनकार, चमत्कारी थे। इनका जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ। जैन दर्शन से प्रभावित होकर जैन धर्म में दीक्षित हुए, इनके पास कई प्रकार की विद्या थी, यहाँ तक सरसों के दानों के माध्यम से सेना पैदा करना तथा किसी भी धातु को स्वर्ण में परिवर्तन की विद्या थी। इनकी प्रमुख संरचना बत्तीस द्वात्रिंशिकाओं है। इनकी ''कल्याण मंदिर स्त्रोत'' नामक पद्य की रचना भी है जिसमें श्री पार्श्वनाथ भगवान की स्तुति है।

3. **आचार्य वीरसेन** - ये नवमीं शताब्दी के दिगम्बर विद्वान् टीकाकार आचार्य थे। ये चन्द्रसेन आर्यनन्दी के शिष्य थे। ये भी चित्तौड़ के रहने वाले थे। इन्होंने एकल सिद्धान्तों का अध्ययन किया और साहित्य रचना का कार्य किया। उन्हें सिद्धान्त, ज्योतिष, व्याकरण, न्याय व प्रमाण शास्त्र का गहन ज्ञान था। इनकी प्रमुख रचना धवला व जय धवला है।

4. **जिन वल्लभसूरि** - ये चैत्यवासी परम्परा के आचार्य थे। इस समय में शिथिलाचार काफी बढ़ गया, इसलिए इन्होंने श्री अभयदेव सूरि से पुनः दीक्षित हुए और शिथिलाचार का विरोध किया। कई शहरों में इस परम्परा के मठ थे और चित्तौड़ में भी मठ था। जिनेश्वरसूरि इस शाखा के अध्यक्ष थे। इन्हीं से दीक्षा ग्रहण कर उनसे व्याकरण, काव्य, न्याय, दर्शन आदि में प्रशिक्षित हुए। इनकी प्रमुख रचना श्रृंगार शतक, चित्रकाव्य, प्रश्नोत्तर शतक, प्रश्नषष्टि शतक, पिण्डविशुद्धि, धर्म शिक्षा आदि जिन स्त्रोत हैं। उस समय यतिगणों का प्रभुत्व

था और उन्हें राजाओं द्वारा सम्मानित किया जाता था। इन्होंने इसका विरोध किया और संवत् 1167 में महावीर भगवान का मंदिर बनवाया।

5. **श्री जिनदत्तसूरि** - ये खरतरगच्छ के आचार्य थे। ये जिन वल्लभ सूरि के शिष्य थे। ये गुजरात राज्य मे धोलका के निवासी थे। इन्होंने केवल 9 वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण की। इन्होंने पाटन में जैन दर्शन का गहन अध्ययन किया और इनको चित्तौड़ में ही देवभद्राचार्य ने संवत् 1169 के वैशाख कृष्ण 6 को सूरि पद से अलंकृत किया और जिनदत्त सूरि नाम दिया। खरतर गच्छ की मान्यता के अनुसार आचार्य की पदवी संघ द्वारा प्रदान की जाती है। उल्लेखानुसार श्री कर्माशाह दोशी के पूर्वज श्री लक्ष्मणसिंह भुवनपालसिंह ने संघ के साथ उस समय सं. 1169 वैशाख कृष्णा षष्टि को सूरि पद से अलंकृत किया। इनकी प्रमुख रचना सन्देहदोहावली, गणधर सप्तनिका, पार्श्वनाथ स्तोत्र, उपदेश धर्म रसायन, सर्व जिन स्तुति, वीर स्तुति आदि है। इन्होनें कई गौत्र का निर्माण किया।

6. **आचार्य सोमप्रभसूरि** - ये बड़गच्छ के आचार्य विजयसिंहसूरि के शिष्य थे। इन्होंने आगम शास्त्र का विशद् अध्ययन किया। इन्होनें 11 वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की और 22 वर्ष की आयु में आचार्य पद प्राप्त किया। इन्होंने चित्तौड़ में ही ब्राह्मण पण्डितों से शास्त्रार्थ कर विजय प्राप्त की। इनकी प्रमुख रचना है 'सुमतिनाह चरित (सुमतिनाथ चरित्र) कुमारपाल पडिबोही (कुमारपाल प्रतिबोध) श्रृंगार, वैराग्य, तरंगिनी, सिन्दूर प्रकर आदि।

7. **श्री उद्योतनसूरि** - वि.सं. 834 में कुवलयमाला एक प्रमुख रचना रचित की।

8. **श्री देवभद्रसूरि** - इन्होंने 12वीं शताब्दी में चित्तौड़ में भागवत शिवमूर्ति को शास्त्रार्थ में पराजित किया।

9. **श्री हरिषेण** - इनका जन्म चित्तौड़ में हुआ और इन्होंने धम्म परिक्खा (धर्म परीक्षा) ग्रन्थ की रचना की।

10. **श्री हीरानंदसूरि** - ये हरिभद्र सूरि के परिवार के ही प. मानचन्द्र के शिष्य थे वे राजस्थानी के महान विद्वान् व कवि थे। महाराणा कुम्भा ने इन्हें गुरू माना और इन्हें कविराज की उपाधि दी।

11. **महाकवि श्री ढ़ड्ढ़ा** - इनका भी प्राग्वाट कुल में चित्तौड़ में ही जन्म हुआ। इन्होंने प्राकृत भाषा निबद्ध पंच संग्रह की रचना की।

12. **श्री सोमसुन्दरसूरि** - इन्होंने देलवाड़ा में कई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा कराई व कई अन्य रचनाएं लिखी तथा चित्तौड़ के महावीर जैन मंदिर का पुनरूद्धार (जिर्णोद्धार) कार्य किया।

13. **मुनि श्री राजसुन्दर** - इन्होंने चित्तौड़ में रहते हुए वि.स. 1558 में महावीर स्तवन की रचना की।

14. **मुनि श्रीराजशील** - खारतरगच्छ के मुनि हर्ष के शिष्य थे तथा इन्होंने चित्तौड़ में रहते हुए ''विक्रम खापर चरित्र'' चौपाई की रचना की।

15. **श्री पार्श्वचन्द्रसूरि** - इन्होंने जैन धर्म की शिक्षा में ही सारा जीवन व्यतीत किया। इनकी अनेक रचनाएं विद्यमान है तथा चित्तौड़ में चैत्य परिपाटि का सृजन किया।

16. **मुनि श्री गजेन्द्र प्रमोद** - तपागच्छीय श्री हेमविमलसूरि के शिष्य मुनि हर्ष प्रमोद के शिष्य थे। ये महाराणा सांगा के राज्य काल में थे उन्होंने चित्तौड़ चैत्य परिपाटी की रचना की।

17. **श्री लालचंद लब्धोदय** - ये चित्तौड़ के ही निवासी थे। अपने समय के उच्च कोटि के विद्वान् थे। जिन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की।

18. **सति श्वेता या खेतकर खरतरगच्छीय कवि दयावल्लभ की शिष्या थी** - इन्होंने वि.स. 1748 में चित्तौड़ गज़ल की रचना की।

19. **मुनि श्री प्रतिष्ठा सोम** - इनकी प्रमुख रचना कथा महोदधि व सोम सौभाग्य काव्य है, जिसमें सोमसुन्दर सूरि के जीवन का वर्णन है।

20. **मुनि श्री चरित्ररत्नमणि** - चित्तौड़ के महावीर जैन मंदिर की प्रशस्ति 104 श्लोकों में इन्होनें सं. 1495 में बनाई जो हस्तलिखित थी, जो भण्डारकर ओरियन्टल इंस्टीट्यूट पूना में थी जो सन् 1908 में प्रकाशित हुई। ये संस्कृत का सुन्दर काव्य है जिसमें चित्तौड़ की प्रशस्ति का वर्णन किया है। इन्होंने ज्ञान प्रदीप पद्यबद्ध ग्रन्थ भी चित्तौड़ में ही पूर्ण किया।

21. **मुनि श्री जिनहर्ष गणि** - इन्होंने सं. 1497 में चित्तौड़ चार्तुमास की अवधि में वस्तुपालचरित्र नामक काव्य की रचना की।

22. **मुनि श्री वाचक सोम देव** - ये सोमसुन्दर सूरि के महान शिष्य विद्वान् थे, इन्हें महाराणा कुम्भा ने कविराज की उपाधि से विभूषित किया। इनकी विद्धता की समानता सिद्धसेन दिवाकर से की जाती है।

23. **मुनि श्री विशालराज** - इन्होंने चित्तौड़ में सं. 1497 में ज्ञान प्रदीप ग्रन्थ रचा।

24. **मुनि श्री ऋषिराज** - ये जयकीर्ति सूरि के शिष्य थे। इन्होंने चित्तौड़ में सं. 1512 में नलराज ऊपई (नलदमयंती रास) की रचना की।

25. **मुनि श्री ऋषि धनराज** - इन्होंने चित्तौड़ नगर में अनंत चौबीसी की रचना की।

26. **मुनि श्री रामकीर्ति** - ये दिगम्बर साधु थे। इन्होंने समिद्धेश्वर की प्रशस्ति की रचना की।

27. **श्री सुन्दरसूरि** - इन्होंने देलवाड़ा में संतिकर स्त्रोत की रचना की। इसके अतिरिक्त अध्यात्म कल्पद्रुम त्रिदशतरंगिणी, उपदेश रत्नाकर स्त्रोत, रत्नकोष, पाक्षिक सित्तरी आदि प्रमुख रचना लिखी है।

मेवाड़ में स्थापित मंदिरों की संख्या असंख्य कह सकते हैं। केवल चित्तौड़ में ही अनेक मंदिर थे। सन् 1608 के फरवरी माह में जब औरंगजेब ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया तब करीब 69 मंदिरों को नष्ट किया। इससे यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि चित्तौड़ व मेवाड़ में कितने मंदिर रहे होंगे। इन सभी तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि मेवाड की संस्कृति 4000 वर्ष से अधिक प्राचीन है, जहाँ पर जैन धर्म विकसित था। दुर्ग का निर्माण चौथी शताब्दी में होना स्पष्ट है।

यद्यपि मेवाड़ के शासक शैव के उपासक थे वरन् उनके हाथ जैनी थे अर्थात शासन प्रबन्ध में सभी मुख्य पद व प्रबन्ध जैनियों द्वारा होता था अत: यह कहा जा सकता है कि राजा की आत्मा शैव की थी तो शरीर जैन का था।

मेवाड़ भूमि इतनी सौभाग्यशाली रही है जहाँ जैन तीर्थकर श्री नेमीनाथ, श्री पार्श्वनाथ व श्री महावीर के चरण-पादुका से पावन हुई है। आवश्यक चूणिकाए के अनुसार भगवान महावीर के प्रथम गणधर भी अपने शिष्यों के साथ मेवाड़ में आने का उल्लेख है।

भूतानाम दयार्थ के जैन शिलालेख से यह स्पष्ट प्रमाणित है कि मेवाड़ भूमि अहिंसा की भूमि रही है। महाराणा अल्लट के बाद राणा वीरसिंह के समय में आहाड़ (आयड़) में जैन धर्म के कई समारोह आयोजित हुए और 500 आचार्यो की एक महत्तवपूर्ण बैठक (संगति) आयोजित हुई तथा लाखों लोग जैन धर्म में (अहिंसा की) दीक्षित हुए जिसमें सैकड़ों विदेशी भी सम्मिलित थे।

श्री हरिभद्रसूरि ने 1444 ग्रन्थों की रचना की तथा आशाधर श्रावक जो बहुत बड़े विद्धान थे, उन्होने लील्लाक श्रावक से बिजोलियां में उच्च शिखर पुराण खुदवाया। धरणाशाह के जिनाभिगम सुत्रावली औधनिर्युक्ति, सटीक, सूर्य प्रज्ञप्ति, कल्प भाष्य आदि की टीका करवाई।

चित्तौड़ निवासी श्रावक आशा ने कर्मस्वत विषांक लिखा। डूंगरसिंह (श्री करण) ने आयड़ में औद्यनिर्युक्ति पुस्तक लिखी। वयजल ने आयड़ में पाक्षिक कृति लिखी। जैन लोगों ने इतिहास रचने में भी सहयोग दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरातत्वेता जिनविजय जी महाराज के ऐतिहासिक संग्रह से कई शौधार्थियों के लिए वरदान स्वरूप महान् कार्य किया है।

उक्त सभी बिन्दुओं पर गहन मंथन किया जाए तो सिन्धुवासियों ने मेवाड़वासियों से कुछ सीखा है। विष्णु पुराण, स्कन्धपुराण के पाताल खण्ड के कुछ अंश के रूप में संदर्भित ''भट्टहर चरित'' जिसका रचनाकाल मेवाड़ का प्राचीनतम गांव भटेवर का विकास माना जा सकता है। मेवाड़ के प्राचीनतम का वर्णन ''एशियन सोसाइटी कोलकोता के संग्रहालय'' में विद्यमान है। इसमें भरत खण्ड देश-विदेशों का एक तीर्थो का तीर्थ है। वृहत संहिता में भी मध्यमिका नगरी का उल्लेख आया है।

अत: इन सभी बिन्दुओं के आधार पर पौराणिक, सामाजिक, भौगौलिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक दृष्टि में मेवाड़ की सभ्यता प्राचीनतम है तथा मेवाड़ पूर्णकाल से अहिंसा का राज्य था। इसके मूल स्वर शौर्य को जैन धर्म ने अहिंसा की व्यावहारिक अभिव्यक्ति की है।

क्या आप जानते हैं :-

आचार्य तुलसी के सदुपदेश एवं प्रेरणा से नोहर (श्री गंगानगर) में स्थापित जिन मंदिर का जिर्णोद्धार करा कर जैन संस्कृति को सुरक्षित किया।